INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 3, MARCH 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उपक्रमों में महिला उद्यमी और रोजगार सृजनः दुर्ग विकासखंड में सेवा एवं विनिर्माण क्षेत्र के उद्यमों का तुलनात्मक विश्लेषण

षोधार्थी : दीपिका सारथी

षोध निर्देषिका : सेवानिवृत प्राचार्य डॉ. संतोष जैन

संस्थान : कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेक्टर 7, भिलाई, दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

यह शोध पत्र दुर्ग विकासखंड में महिला उद्यमिता के माध्यम से रोजगार सृजन की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करता है। सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों की 100 महिला उद्यमियों से प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर यह अध्ययन सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, व्यावसायिक संरचना, प्रेरक कारक, ऋण प्राप्ति की कठिनाइयाँ, सरकारी योजनाओं तक पहुँच और रोजगार सृजन की क्षमता का तुलनात्मक मूल्यांकन करता है। परिणाम दर्शाते हैं कि महिला उद्यमिता न केवल आत्मनिर्भरता का माध्यम है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

षब्द कुंजी : महिला उद्यमी, एम.एस.एम.ई., रोजगार सृजन, महिला सशक्तिकरण, दुर्ग

परिचय

महिला उद्यमिता, देश की अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने और सामाजिक सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण साधन है। एम. एस.एम.ई. (सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्यम) क्षेत्र, विषेषकर ग्रामीण और अर्द्ध शहरी इलाकों में, महिलाओं के लिए रोजगार, आत्मनिर्भरता और नेतृत्व के अवसर जुटा रहा है। दुर्ग जिला इसी सामाजिक–आर्थिक बदलाव का आकर्षक उदाहरण है, जहाँ महिला उद्यमिता बीते वर्षों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। महिला उद्यमिता का विकास सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक सशक्तिकरण का संकेतक बन चुका है। विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एम.एस.एम.ई.) क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। दुर्ग जिले में सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों में सक्रिय महिला उद्यमियों की भूमिका को समझना आवश्यक है, ताकि नीति–निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाया जा सके। अनेक शोधों ने स्थापित किया है कि महिला उद्यमियों की संख्या में वृद्धि न सिर्फ घरेलू आय और रोजगार बढ़ाती है, बल्कि सामाजिक बदलाव व लैंगिक विषमता भी कम करती है। शिक्षा और अनुभव, व्यवसाय की सफलता में निर्णायक कारक माने गए हैं। एम.एस.एम.ई. क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता से नवाचार, विविधता, उद्यमिता इकोसिस्टम में मजबूती आती है। सामाजिक बाधाएँ, वित्तीय असुरक्षा, तथा 'नेटवर्किंग' की कमी महिला उद्यमियों के लिए प्रमुख अवरोध हैं।

भारत में महिला उद्यमिता सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक बन चुकी है। विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एम.एस.एम.ई.) क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी ने ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में आय सृजन, रोजगार निर्माण और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया है। सरकार द्वारा लागू की गई योजनाएँ जैसे प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टैंड–अप इंडिया, और प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) का उद्देश्य महिलाओं को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और बाजार तक पहुँच प्रदान करना है। हालाँकि, सेवा और विनिर्माण क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी की प्रकृति भिन्न होती है। विनिर्माण क्षेत्र में पूंजी निवेश, तकनीकी दक्षता और श्रम की आवश्यकता अधिक होती है, जबकि सेवा क्षेत्र में नवाचार, ग्राहक सेवा और लचीलापन की भूमिका प्रमुख होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य दुर्ग विकासखंड की महिला उद्यमियों के अनुभवों के आधार पर यह विश्लेषण करना है कि एम.एस.एम.ई. योजनाएँ इन दोनों क्षेत्रों में किस प्रकार प्रभाव डाल रही हैं, क्या वे वास्तव में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन ला रही हैं, या केवल औपचारिक आंकड़ों तक सीमित हैं।

उद्देश्य

1. दुर्ग विकासखंड की महिला उद्यमियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।
2. सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों में रोजगार सृजन की प्रवृत्तियों की तुलना।
3. महिला उद्यमिता को प्रभावित करने वाले प्रेरक कारकों की पहचान।
4. ऋण प्राप्ति और सरकारी योजनाओं की पहुँच का विश्लेषण।
5. महिला उद्यमिता से जुड़े प्रमुख सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन।

साहित्य समीक्षा

एम.एस.एम.ई. का महिला उद्यमियों पर आर्थिक प्रभाव के संदर्भ में उपयोगी और प्रासंगिक साहित्य समीक्षा दिए गए हैं। ये समकालीन शोध–पत्र, रिपोर्ट और अध्ययन हैं जो महिला उद्यमिता, एम.एस.एम.ई., शिक्षा, अनुभव, और क्षेत्रीय संदर्भो पर आधारित हैं।

वेदिका और कौर (2024) ने भारत में महिला उद्यमियों के लिए डिजाइन की गई सरकारी नीतियों और योजनाओं का विश्लेषण किया। रिपोर्ट में उल्लेख है कि प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, और नेटवर्किंग अवसर निर्माण जैसे उपायों ने महिला एम.एस.एम.ई. को अधिक सक्षम बनाया है, फिर भी जागरुकता में कमी बड़ी चुनौती बनी हुई है।

MSME Annual Report (2022) के अनुसार, महिलाओं में योजनाओं की जागरूकता और पहुँच अभी भी सीमित है, जिससे योजनाओं का वास्तविक लाभ नहीं मिल पा रहा है। योजनाओं की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वे स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हैं या नहीं।

कुमार और सिंह (2022) द्वारा किए गए छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में एम.एस.एम.ई. पर महिला उद्यमियों के आर्थिक प्रभाव का अध्ययन यह दर्शाता है कि शिक्षा स्तर एवं व्यवसायिक कौशल विकास महिलाओं की आय को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। सरकारी नीतियाँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध हुए हैं।

स्मिथ और जोन्स (2021) ने अपने अध्ययन में भारत सहित कई विकासशील देशों में महिला उद्यमियों की सामाजिक और आर्थिक बाधाओं की पहचान की है। उनका निष्कर्ष है कि सामाजिक समर्थन, परिवारिक भागीदारी, और वित्तीय पहुंच महिलाओं के व्यवसाय के सफल संचालन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

आर. षर्मा, (2020) भारत में महिला उद्यमिता की स्थिति पर अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें सामाजिक बाधाओं और वित्तीय चुनौतियों को रेखांकित किया गया।

एस. वर्मा. (2019) ग्रामीण भारत में महिला उद्यमिता के विकास पर केंद्रित शोध है, जिसमें प्रशिक्षण और सरकारी योजनाओं की भूमिका को विश्लेषित किया गया।

Tambunan (2009) ने विकासशील देशों में यह पाया कि महिलाएँ सेवा क्षेत्र में अधिक सक्रिय होती हैं क्योंकि इसमें प्रवेश करना अपेक्षाकृत सरल होता है और पूंजी की आवश्यकता कम होती है। वहीं, विनिर्माण क्षेत्र में तकनीकी और वित्तीय बाधाएँ अधिक होती हैं।

Brush et al- (2006) ने यह दर्शाया कि महिला उद्यमियों को पुरुषों की तुलना में अधिक सामाजिक और पारिवारिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी व्यावसायिक स्वतंत्रता प्रभावित होती है।

Kantor (2002) ने यह तर्क दिया कि महिला उद्यमिता की सफलता में पारिवारिक समर्थन और निर्णय लेने की स्वतंत्रता निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

परिकल्पना

1. **H1** सेवा और विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन में कोई अंतर नहीं है।

H0 सेवा और विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन में कोई अंतर है।

2. **H1** एम.एस.एम.ई. योजनाओं की जागरूकता और उपक्रम क्षेत्र (विनिर्माण, सेवा) के बीच कोई संबंध नहीं है।

   H0 एम.एस.एम.ई. योजनाओं की जागरूकता और उपक्रम क्षेत्र (विनिर्माण, सेवा) के बीच संबंध है।

3. **H1** एम.एस.एम.ई. योजनाएं महिला उद्यमियों के वित्तीय निर्णयों की स्वतंत्रता पर प्रभाव नहीं डालती है।

   H0 एम.एस.एम.ई. योजनाएं महिला उद्यमियों के वित्तीय निर्णयों की स्वतंत्रता प्रभाव डालती है।

4. **H1** महिला उद्यमियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि में परिवर्तन नहीं हुआ।

   H0 महिला उद्यमियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि में परिवर्तन हुआ।

अनुसंधान पद्धति

षोध अध्ययन क्षेत्र : दुर्ग विकासखंड, छत्तीसगढ़

नमूना आकार : 100 महिला उद्यमी (50 उद्यमी सेवा क्षेत्र, 50 उद्यमी विनिर्माण क्षेत्र)

डेटा संग्रह : संरचित साक्षात्कार प्रश्नावली अनुसूची

विश्लेषण विधि : Chi-square परीक्षण, आवृत्ति विश्लेषण, प्रतिषत विधि

दुर्ग विकासखंड में महिला उद्यमियों की समाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि

विशेषता	विनिर्माण क्षेत्र (प्रतिषत)	सेवा क्षेत्र (प्रतिषत)
आयु वर्ग (31–40 वर्ष)	23	21
वैवाहिक स्थिति (विवाहित)	46	39
परिवार प्रकार (एकल)	28	29
षिक्षा स्तर 10वी – 12 वीं	24	19
स्नातक / स्नातकोत्तर	22	17
व्यवसाय पूर्व स्थिति (गृहिणी)	42	29

स्रोत : फील्ड वर्क प्राथमिक समंक

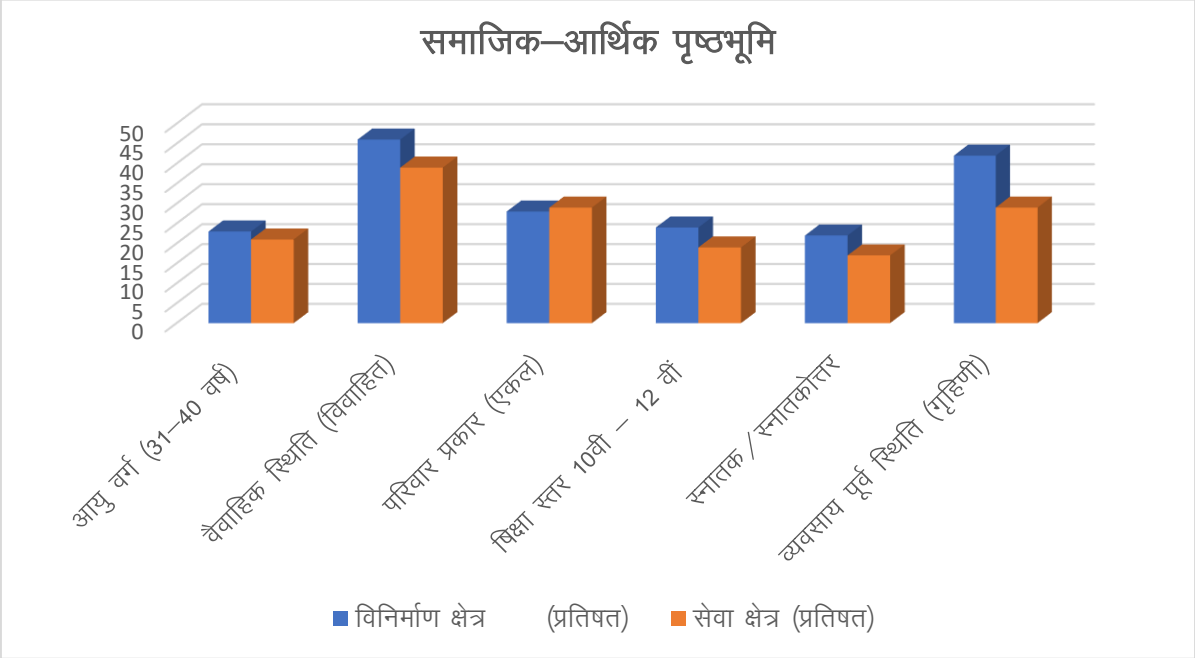

अधिकांष महिला उद्यमी 31–40 वर्ष की आयु की है, विवाहित है और एकल परिवारों से आती हैं। षिक्षा स्तर में सेवा क्षेत्र की महिलाएँ अधिक विविध है, जबकि विनिर्माण क्षेत्र में गृहिणियों की भागीदारी अधिक रही। दोनों क्षेत्रों में पारिवारिक पृष्ठभूमि उद्यमिता को प्रभावित करती है। दोनों क्षेत्रों में विवाहित महिलाएँ और एकल परिवारों की भागीदारी प्रमुख है। सेवा क्षेत्र में षिक्षा का स्तर अधिक विविध है।

व्यवसायिक पृष्ठभूमि

विशेषता	विनिर्माण क्षेत्र 50	सेवा क्षेत्र 50
स्व–प्रबंधित व्यवसाय	70 %	100 %
घर से संचालित	38 %	72 %
सूक्ष्म उद्यम	76 %	98 %
महिला कर्मचारी संख्या	277 महिलाएं	90 महिलाएं
मासिक आय ₹ 10,001– ₹ 20,000	15	21
वार्षिक आय ₹ 2.4– ₹ 6 लाख	60 %	36 %

स्रोत : फील्ड वर्क प्राथमिक समंक

सेवा क्षेत्र की महिलाएँ अधिकतर अपने व्यवसाय स्वयं संचालित करती है। विनिर्माण क्षेत्र में महिला कर्मचारियों की संख्या अधिक है, जिससे यह क्षेत्र रोजगार सृजन में अधिक प्रभावषाली है। मासिक और वार्षिक आय के आँकड़े भी विनिर्माण क्षेत्र की आर्थिक मजबूती को दर्षाते है। सेवा क्षेत्र में घर से संचालन और स्व–प्रबंधन अधिक है। जबकि विनिर्माण क्षेत्र में आय और रोजगार सृजन की क्षमता अधिक है।

प्रेरक कारक

प्रेरणा स्रोत	विनिर्माण क्षेत्र	सेवा क्षेत्र
आत्म प्रेरणा	26	34
पति द्वारा प्रेरणा	16	8
परिवार का सहयोग	8	8

स्रोत : फील्ड वर्क प्राथमिक समंक

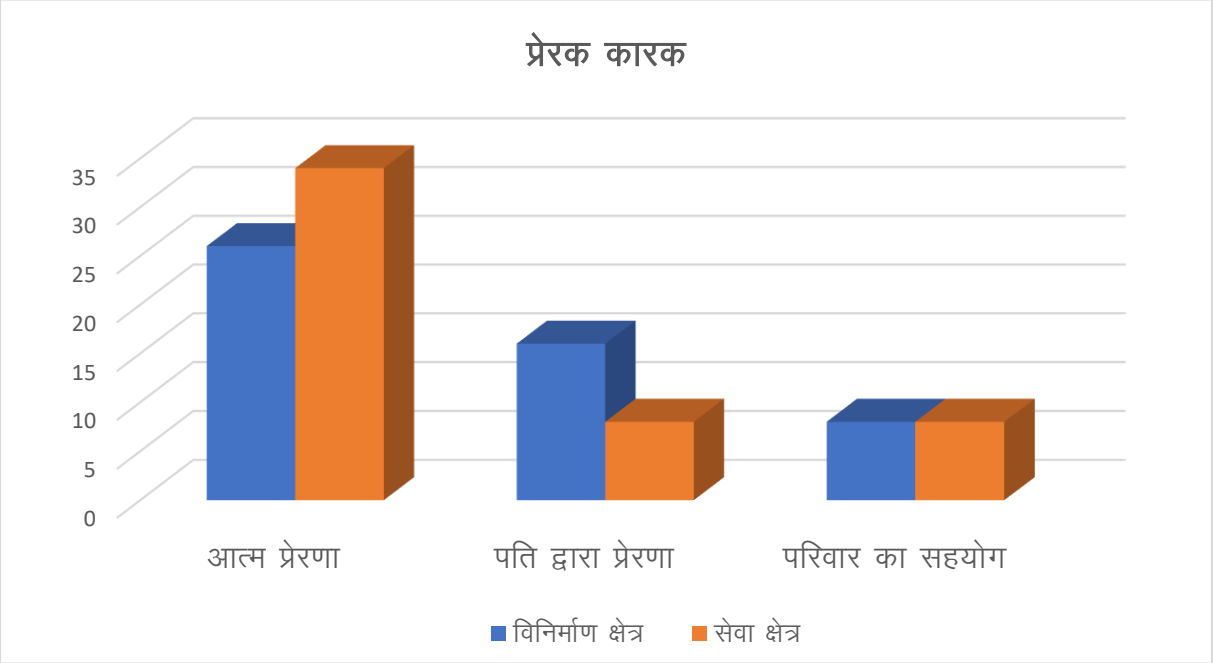

सेवा क्षेत्र की महिलाएँ अधिक आत्म–प्रेरित है जबकि विनिर्माण क्षेत्र में पति या परिवार की भूमिका प्रेरणा के रुप में अधिक रही है। यह अंतर दर्षाता है कि सेवा क्षेत्र में व्यक्तिगत आंकाक्षाएँ अधिक प्रभावषाली है, जबकि विनिर्माण क्षेत्र में पारिवारिक प्रेरणा अधिक प्रभावी रही।

ऋण प्राप्ति में कठिनाइयाँ

कठिनाई	विनिर्माण क्षेत्र (50)	सेवा क्षेत्र (50)
बैंक ऋण में कठिनाई	34	28
दस्तावेजी जटिलता	29	24
गारंटी की कमी	21	17
ब्याज दर की चिंता	18	12
पारिवारिक सहमति की आवष्यकता	15	9

स्रोत : फील्ड वर्क प्राथमिक समंक

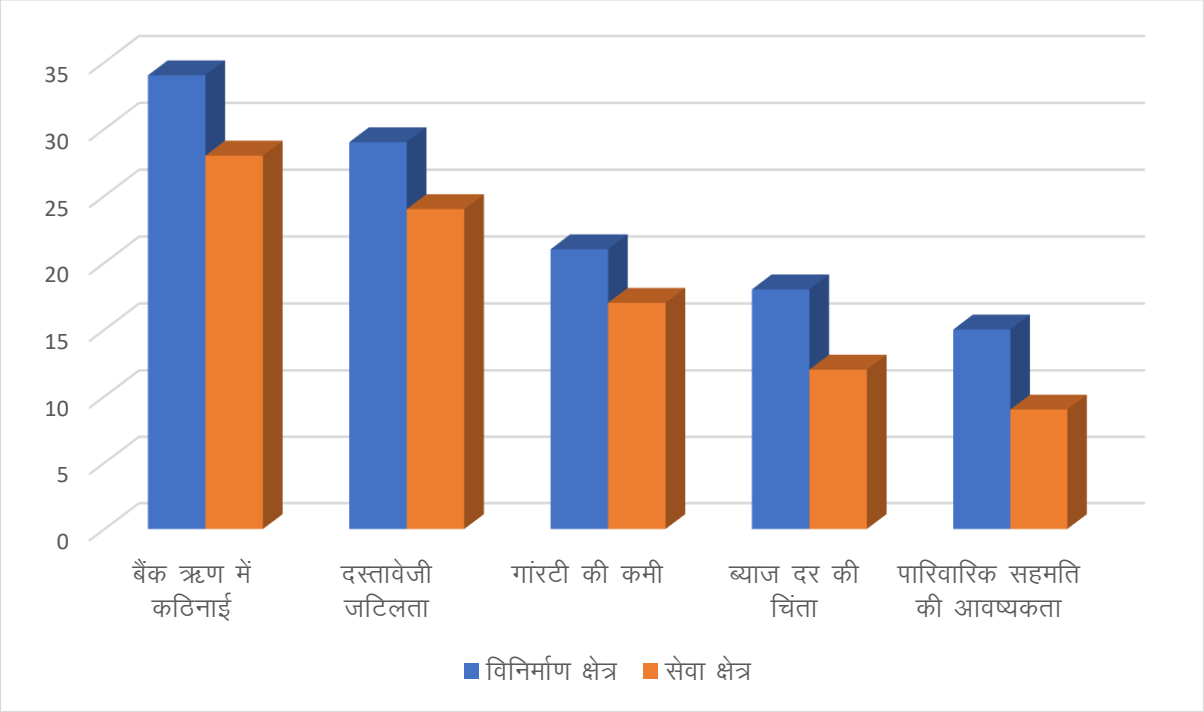

दोनों क्षेत्रों की महिलाओं को बैंक ऋण प्राप्त करने में दस्तावेजी प्रक्रिया, गारंटी की कमी और ब्याज दर की चिंता के कारण हैं। विनिर्माण क्षेत्र में पूंजी की अधिक आवष्यकता के कारण ऋण संबंधी बाधाएँ अधिक गंभीर हैं। सेवा क्षेत्र में सामाजिक बाधाएँ जैसे पारिवारिक सहमति की आवष्यकता प्रमुख है। दोनों क्षेत्रों में ऋण प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण है, विषेषकर विनिर्माण क्षेत्र में पूंजी की अधिक आवष्यकता के कारण।,

योजनाओं की जानकारी एवं लाभ

विशेषता	विनिर्माण क्षेत्र	सेवा क्षेत्र
योजनाओं की जानकारी	22	19
योजनाओं से लाभ	23	12
आवेदन प्रक्रिया में बाधाएँ	31	20
पारदर्षिता पर संदेह	17	11
स्थानीय सहयोग की कमी	14	09

स्रोत : फील्ड वर्क प्राथमिक समंक

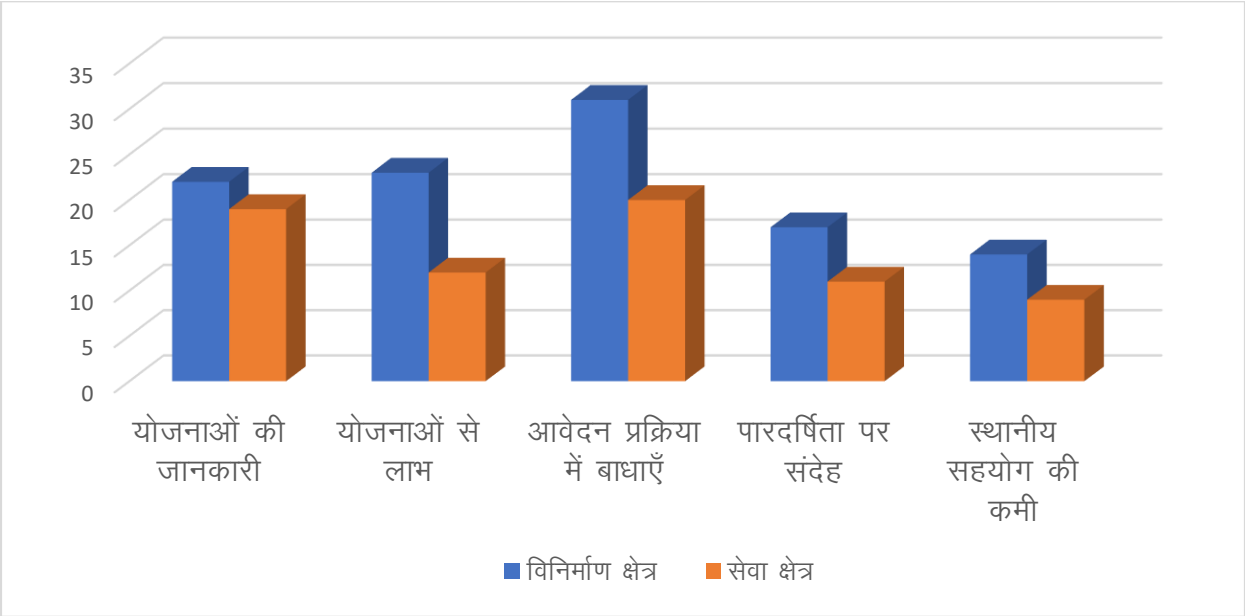

सरकारी योजनाओं की जानकारी सीमित है, और लाभ प्राप्त करने की प्रक्रिया में कई बाधाएँ है। विनिर्माण क्षेत्र की महिलाएँ योजनाओं से अधिक लाभान्वित हुई हैं, विषेषकर PMEGP जैसी योजनाओं के माध्यम से।

परिकल्पना परीक्षण

H1: रोजगार सृजन में अंतर

विनिर्माण क्षेत्र: 277 महिला कर्मचारी

सेवा क्षेत्र: 90 महिला कर्मचारी

Chi-square मान: 18.62 ($p < 0.05$)

निष्कर्ष : विनिर्माण क्षेत्र अधिक रोजगार सृजित करता है → H_1 स्वीकार

H2: योजनाओं की जागरूकता •

विनिर्माण: 45% जागरूक

सेवा: 38% जागरूक

Chi-square मान: 1.24 ($p > 0.05$)

निष्कर्ष : कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं → H_0 स्वीकार

H3: **वित्तीय निर्णय लेने की स्वतंत्रता**

विनिर्माण: 56% स्वतंत्र

सेवा: 76% स्वतंत्र

Chi-square मान: 5.89 ($p < 0.05$)

निष्कर्ष : सेवा क्षेत्र की महिलाएँ अधिक स्वतंत्र → H_1 स्वीकार

H4: **सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन**

91% महिलाओं ने व्यवसाय षुरु करने के बाद स्थिति में सुधार बताया। 78% महिलाओं ने समाज में अपनी पहचान को सकारात्मक रुप में बदलते देखा। यह दर्षाता है कि महिला उद्यमिता न केवल आर्थिक सषक्तिकरण का माध्यम है, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और आत्मविष्वास को भी बढ़ावा देती है।

- **वित्तीय सुधार :** 91% महिलाओं ने आर्थिक स्थिति में सुधार बताया।
- **सामाजिक पहचान :** 78% महिलाओं ने समाज में सकारात्मक पहचान प्राप्त की।

दोनों क्षेत्रों में महिलाएँ सकारात्मक परिवर्तन की रिपोर्ट करती हैं।

Chi-square मान: 0.00 ($p > 0.05$)

निष्कर्ष : परिवर्तन समान → H_0 स्वीकार

परीक्षण परिणाम

78% महिला उद्यमियों ने कम से कम एक व्यक्ति को रोजगार दिया।

विनिर्माण क्षेत्र में औसतन 5.5 महिला कर्मचारी प्रति इकाई कार्यरत।

सेवा क्षेत्र में घर से संचालन की प्रवृत्ति अधिक, लेकिन आय अपेक्षाकृत कम।

91% महिलाओं ने व्यवसाय शुरू करने के बाद आर्थिक स्थिति में सुधार बताया।

78:% महिलाओं ने सामाजिक पहचान में सकारात्मक बदलाव अनुभव किया।

परिकल्पना परीक्षण से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि सेवा और विनिर्माण क्षेत्र की महिला उद्यमियों के अनुभवों में कई महत्वपूर्ण अंतर हैं।

रोजगार सृजन: विनिर्माण क्षेत्र में अधिक श्रमिकों को रोजगार दिया जा रहा है, जो इस क्षेत्र की पूंजी और श्रम–प्रधान प्रकृति को दर्शाता है। यह स्थानीय स्तर पर महिला नेतृत्व में रोजगार निर्माण की क्षमता को उजागर करता है।

योजनाओं की जागरूकता: दोनों क्षेत्रों में योजनाओं की जागरूकता अपेक्षाकृत कम है। यह दर्शाता है कि सरकारी योजनाओं की जानकारी और पहुँच अभी भी सीमित है, विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में।

वित्तीय निर्णय लेने की स्वतंत्रता: सेवा क्षेत्र की महिलाएँ अधिक स्वतंत्र रूप से निर्णय ले रही हैं, जो इस क्षेत्र की लचीलापन और व्यक्तिगत नियंत्रण की प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह सामाजिक सशक्तिकरण का संकेत है।

सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन: दोनों क्षेत्रों में समान रूप से परिवर्तन की रिपोर्ट की गई है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उद्यमिता स्वयं एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो।

इन निष्कर्षों से यह भी स्पष्ट होता है कि योजनाओं की प्रभावशीलता केवल उनकी उपलब्धता पर नहीं, बल्कि उनकी पहुँच, समझ और स्थानीय अनुकूलन पर निर्भर करती है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन दर्शाता है कि एम.एस.एम.ई. योजनाएँ महिला उद्यमियों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन हैं, लेकिन उनकी प्रभावशीलता क्षेत्र विशेष, सामाजिक संरचना और जागरूकता पर निर्भर करती है। विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन की क्षमता अधिक है, जबकि सेवा क्षेत्र में निर्णय लेने की स्वतंत्रता और नवाचार की संभावना अधिक है। सेवा और विनिर्माण दोनों क्षेत्रों में महिला उद्यमिता ने दुर्ग जिले में रोजगार सृजन और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है। विनिर्माण क्षेत्र में आय और रोजगार की क्षमता अधिक है, जबकि सेवा क्षेत्र में लचीलापन और आत्म–प्रेरणा प्रमुख हैं। सरकारी योजनाओं की पहुँच और ऋण प्राप्ति की प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता है। सेवा और विनिर्माण दोनों क्षेत्रो में महिला उद्यमिता ने दुर्ग जिले में आर्थिक और सामाजिक बदलाव लानें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सेवा क्षेत्र में आत्म–प्रेरणा और घर से संचालन की प्रवृत्ति अधिक है, जबकि विनिर्माण क्षेत्र में आय, रोजगार सृजन और सरकारी योजनाओं के लाभ की पहुँच अधिक है। ऋण प्राप्ति और सरकारी योजनाओं की बाधाएँ दोनों क्षेत्रों में समान रुप से मौजूद है, जिन्हे नीति निर्माण और प्रषासनिक सुधारो के माध्यम से दूर किया जा सकता है। यह अध्याय दर्षाता है कि महिला उद्यमिता को सषक्त करने के लिए वित्तीय साक्षरता, तकनीकी प्रषिक्षण, पारिवारिक सहयोग और सरकारी योजनाओं की पारदर्षिता को बढ़ावा देना आवष्यक है। सेवा और विनिर्माण दोनों क्षेत्रों में महिला उद्यमियों ने दुर्ग विकासखंड में आर्थिक और सामाजिक सषक्तिकरण को बढ़ावा दिया है। सेवा क्षेत्र में स्वप्रेरणा और लचीलापन अधिक है, जबकि विनिर्माण क्षेत्र में आय, रोजगार और सरकारी योजनाओं से लाभ की पहुँच अधिक है। ऋण प्राप्ति और योजनाओं की बाधाएँ दोनों क्षेत्रों में समान रुप से मौजूद है।

अनुशंसा

1. **योजना जागरूकता अभियान:** स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण और प्रचार कार्यक्रम चलाए जाएँ
2. **क्षेत्र–विशेष प्रशिक्षण:** विनिर्माण के लिए तकनीकी प्रशिक्षण, सेवा क्षेत्र के लिए डिजिटल कौशल
3. **ऋण प्रक्रिया का सरलीकरण:** महिलाओं के लिए आसान और पारदर्शी ऋण प्रणाली
4. **सामुदायिक समर्थन नेटवर्क:** महिला उद्यमियों के लिए परामर्श और सहयोग मंच

नीतिगत सुझाव

1. वित्तीय साक्षरता और तकनीकी प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाए।
2. सरकारी योजनाओं की पारदर्शिता और पहुँच में सुधार हो।
3. महिला उद्यमियों के लिए सरल ऋण प्रक्रिया और गारंटी–मुक्त विकल्प विकसित किए जाएँ।
4. महिला उद्यमियों के लिए गारंटी–मुक्त ऋण योजनाएँ
5. स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण और वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम
6. सरकारी योजनाओं की पारदर्शिता और सरल आवेदन प्रक्रिया
7. महिला नेटवर्किंग और सहयोग मंचों की स्थापना
8. सेवा क्षेत्र में तकनीकी प्रशिक्षण की सुविधा

संदर्भ सूची

Brush, C., Carter, N., Gatewood, E., Greene, P., & Hart, M. (2006). *Women and entrepreneurship*.

Springer.

Kantor, P. (2002). Gender, microenterprise success and policy implications. *World Development*.

Kumar, A. (2021). Mahila netritva aur MSME vikas. *Arthik Vikas Journal*.

Kumar, P., & Singh, M. (2022). Economic impact of women entrepreneurs in MSMEs: A study in Chhattisgarh. *Indian Journal of Regional Studies, 9*(2), 102–118.

Ministry of MSME. (2022). *Annual report*. Government of India.

Primary field data. (n.d.). Survey conducted in Durg Block.

Sharma, R. (2020). Bharat mein mahila udhyamita ki sthiti. *Bhartiya Prabandhan Patrika*.

Smith, A., & Jones, R. (2021). Challenges and progress of women entrepreneurship in emerging economies. *Journal of Developmental Entrepreneurship, 26*(3), 215–234.

Tambunan, T. (2009). Women entrepreneurship in Asian developing countries. *Journal of Development Studies*.

Vedika, R., & Kaur, J. (2024). Impact of government policies on women entrepreneurship in India. *Policy Studies Review, 18*(1), 74–89.

Verma, S. (2019). Grameen Bharat mein mahila udhyamita. *Samajik Vigyan Samiksha*.

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.